

शक्तिपीठ 7. (तीर्थ) शिव की प्रथम पत्नी दक्ष पुत्री सती के शव के किसी अंग आदि गिरने से बना पवित्र स्थान टि. उक्त पवित्र स्थानों को शक्तिपीठ कहा जाता है, इनकी संख्या 51 या 108 मानी गई है।

पीठ स्त्री. (तद्.) 1. प्राणियों के गर्दन के पीछे कमर तक का भाग 2. किसी वस्तु का पृष्ठभाग जैसे- मोबाइल फोन की पीठ पर कंपनी का लोगो (logo) बना होता है 3. सिले-सिलाए वस्त्रों के सामने वाले भाग से इतर पीछे वाला भाग; जैसे- जैकेट की पीठ पर कसीदाकारी की हुई है 4. कुर्सी, सोफा आदि पर बैठने वाले के पृष्ठ को सहारा देने वाला भाग; जैसे- कुर्सी/सोफा की पीठ मुहा. पीठ उधेड़ना- बुरी तरह से पीटना/मारना; पीठ ठोंकना- शाबाशी देना, प्रशंसा करना; पीठ पीछे- किसी की अनुपस्थिति में; पीठ दिखाना- पराजित होकर भाग जाना; पीठ पर हाथ फेरना- उत्साह बढ़ाना; पीठ में छुरा घोंपना- विश्वासघात करना/छल करना; पीठ सहलाना- स्नेह प्रदर्शित करना।

पीठमर्द वि. (तद्.) अत्यंत निर्लज्ज व्यक्ति पुं. वेश्याओं के नृत्य/गायन कला के उस्ताद काव्य नायक के चार प्रकार के सखाओं में से एक जो नायिका के रुष्ट होने पर उसे मनाने में नायक का सहयोग करता है टि. 1. नायक के सखा के 3. भेद बताए गए हैं 'विट', 'विदूषक' एवं 'चेटक' 2. 'पीठमर्द', 'पताका-नायक' के नाम से भी जाना जाता है, 'रामायण' में 'सुग्रीव' पताका नायक की कोटि का नायक है।

पीठासीन वि. (तद्.) जो किसी संस्था या समारोह में अध्यक्ष के स्थान पर स्थित हो प्रयो. पीठासीन होना- अध्यक्षता करना।

पीठिका स्त्री. (तद्.) 1. छोटा पीढ़ा 2. वह आधार जिस पर किसी वस्तु को स्थापित किया गया हो 3. पृष्ठभूमि 4. किसी पुस्तक/ग्रंथ की भूमिका।

पीठी स्त्री. (तद्.) 2. पिट्ठी 2. भिगोकर पीसा हुआ चावल या पीसी हुई दाल।

पीड़ पुं. (तद्.) मुकुट।

पीड़ स्त्री. (तद्.) पीड़ा, कष्ट, पीर।

पीड़क वि. (तद्.) 1. पीड़ा देने वाला, कष्ट पहुँचाने वाला 2. अत्याचारी।

पीड़न पुं. (तद्.) 1. किसी व्यक्ति को कष्ट पहुँचाना 2. किसी वस्तु को दबाना या पीसना 3. कोल्हू में पेरना (गन्ना, सरसों आदि)

पीड़नीय वि. (तद्.) जिसे कष्ट/दुःख पहुँचाया जाने वाला हो।

पीड़ा स्त्री. (तद्.) दुःख, दर्द, व्यथा, कष्ट, तकलीफ।

पीड़ानुरक्ति स्त्री. (तद्.) स्वयं को अथवा किसी अन्य को कष्ट पहुँचाने से मिली सुख की अनुभूति।

पीड़ाभीति स्त्री. (तद्.) मनो. एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें शारीरिक पीड़ा के संदेह मात्र से भय का अनुभव होने का मानसिक विकार।

पीड़ारति स्त्री. (तद्.) मनो. काम-तुष्टि के लिए स्वयं को या दूसरों को कष्ट देने की प्रवृत्ति।

पीड़ी स्त्री. (तद्.) 1. देव स्थान, देव-पीठ 2. वेदी 3. कुम्हार द्वारा प्रयुक्त एक वस्तु जो पकी हुई मिट्टी की बनी समतल, मूठयुक्त एवं गोलाईनुमा तल वाली होती है टि. घड़े आदि बनाते समय इसे घड़े के अंदर लगाते हैं उसके उपरांत थापी से पीट-पीटकर घड़े आदि का आकार दिया जाता है।

पीढ़ा पुं. (तद्.) लकड़ी आदि का बैठने हेतु बना हुआ गोल या चौकी के आकार का छोटा और कम ऊँचा आसन विलो. पीढ़ी- बैठने का छोटा आसन या छोटी चौकी।

पीढ़ी स्त्री. (तद्.) 1. वंश परंपरा की संतति की कड़ी 2. एक ही समय या काल में जन्में या जीवनयापन करने वाले लोग जैसे- गाँधी जी की पीढ़ी, तीस या पैंतीस वर्ष के अंतराल के पिता-पुत्र या पुत्री-माता की आयु का अंतर टि. पिता-पुत्र की पीढ़ी का अंतर एक दूसरे को समझने में कठिनाई उत्पन्नकरता है जिसे पीढ़ी का अंतर (generation gap) कहा जाता है।